[Class-XI ,subject-English,Hornbill,Chapter -1]

==========

**Prose Section:The Portrait of a Lady**

**By Khushwant Singh**

MADE BY :
SUBHASH OJHA ,
LECTURER ,Govt.Model Inter College
ATHGAONSHILING, {PITHORAGARH}

**Summary of the story**

The writer speaks of his own grandmother. By the time, he wrote the story, she was quite old and all her hairs had been white. Her wrinkled face and body gave him a kind of surprise. Since twenty years, the writer is with his grandmother. People said that once the old lady was as beautiful as a fairy. Her husband -- writer's grandfather was also very handsome. His photo was being hung in the drawing room of the writer. Grandmother had always been short and fat, and her back was slightly bent. Wrinkles were across on her face. When the writer came to know her, she had been such condition. She was wearing a spotless white saree. Her silver locks were scattered untidily over her pale puckered face, and her lips constantly moved in inaudible prayer. She was like the winter landscape in the mountains. Both the writer and his grandmother were good friends. His parents had left him with his grandmother at village. His parents were in city. Every day, she used to wake up the writer to be ready to go to school. She was uttering the monotonous song while she was bathing. The writer liked her very much. His grandmother was going to school with him because there was the temple nearer the school. She would sit among the children and listen to the priest's prayer.

When writer's parents were settled in the city, they sent for them. That was a turning point in their friendship. Both the writer and his grandmother started spending days separately and the writer became separated from the close relation with his grandmother. When he reported her about the music lesson he was being taught his grandma felt sorrow, because she knew that music had been associated with hariots. She said nothing but her silence meant disapproval. When the writer went to University, he was allotted a room for his staying. His grandmother spent time with her spinning wheel. From sunrise to sunset she sat by her wheel spinning and reciting prayers. In the afternoon, she relaxed for a while to feed the sparrows. She was always getting surrounded by sparrows that were perching on her legs and shoulders. Some even sat on her head.

When the writer decided to go abroad for further studies and his grandmother would be upset. But she came to leave him at the railway station but did not talk or show any emotion. She was totally absorbed in prayer and her fingers were busy telling the beads of her rosary.

After five years, he came back home and was received at the station by his grandmother. She did not look a day older. The author could feel her pulse as usual. That evening she was seen very happy spending time with the older women folk.

The next day morning she was found being ill. Doctor was called for and he told that the fever was mild and she would be well within a short time. But she told others that her time had come. She lay peacefully in bed praying and telling her beads. Next time she breathed her last. Then the funeral arrangements and proceedings went on. The dead body of the grandmother was covered with a red shroud. A crude stretcher was brought to take her to be cremated. By that

time, thousands of sparrows sat scattered on the floor. There was no chirruping. When her corpse was taken, the sparrows flew away quietly. Here ends the portrait of a pious lady.

## कहानी का सार

लेखक अपनी दादी के बारे में बताता है जिस समय उसने कहानी लिखी, वह काफी बूढ़ी थी और उसके सारे बाल सफेद हो चुके थे।उनके झुर्रीदार चेहरे और शरीर से उसे एक तरह का आश्चर्य होता था। बीस साल से, लेखक अपनी दादी के साथ है। लोग कहते थे कि यह बूढ़ी औरत कभी एक परी की तरह सुंदर थी। उनके पति–लेखक के दादा भी बहुत सुंदर थे। उनकी तस्वीर को लेखक के ड्राइंग रूम में लटकाया जा रहा था।

दादी हमेशा छोटी और मोटी थीं, और उसकी पीठ थोड़ी सी झुकी थी। झुर्रियां उसके चेहरे पर थीं। जब लेखक उन्हें जानने लगे, उनकी स्थिति वैसी ही थी। वह एक बेदाग सफेद साड़ी पहनती थी। उनके चांदी से बाल उनके पीले झुर्रीदार चेहरे पर बिखरे रहते थे, और उसके होंठ लगातार सुनाई न देने वाली प्रार्थना गाते हुये हिलते रहते थे। वह पहाड़ों में शीतकालीन परिदृश्य की तरह थी।

लेखक और उनकी दादी दोनों अच्छे दोस्त थे।उसके माता–पिता ने उसे गांव में अपनी दादी के साथ छोड़ दिया था। उनके माता–पिता शहर में थे। प्रत्येक दिन, वह स्कूल जाने के लिए लेखक को तैयार करने के लिये जगाती थीं। जब वह स्नान करती थी, तब वह एकाकी नीरस गाना गाती थी। लेखक उन्हें बहुत पसंद करते थे। उनकी दादी उनके साथ स्कूल जाती थी क्योंकि स्कूल के पास मंदिर था। वह बच्चों के बीच बैठती थीं और पुजारी की प्रार्थना सुनती थी।

जब लेखक के माता–पिता शहर में बस गए, तो उन्होंने उसे शहर बुला लिया। यह उनकी दोस्ती में एक महत्वपूर्ण मोड़ था ।लेखक और उनकी दादी दोनों अलग–अलग दिन बिताते थे और लेखक अपनी दादी के साथ उस करीबी संबंध से अलग हो गए। जब उन्होंने उन्हें संगीत के सबक के बारे में बताया, जो लेखक को पढ़ाया जा रहा था तो दादी बहुत दुःखी हुई, क्योंकि वह जानती थी कि संगीत का संवन्ध वैश्याओं से है। उन्होंने कुछ नहीं कहा लेकिन उसकी चुप्पी का मतलब अस्वीकृति था।

जब लेखक यूनिवर्सिटी गए, तो उन्हें अपने रहने के लिए एक कमरा आवंटित किया गया। उनकी दादी कताई के चरखे के साथ समय बिताती थीं। सूर्योदय से सूर्यास्त तक वह कताई के चरखे के पास बैठी प्रार्थना गुनगुनाया करती थी। दोपहर में, गौरैया पक्षियों को खिलाने के लिए कुछ समय तक आराम करती।वह हमेशा गौरैया पक्षियों से घिरी रहती थीं, जो उसके पैरों और कंधों पर बैठ जाती थी। कुछ उनके सिर पर भी बैठ जाती थी।

जब लेखक ने आगे की पढ़ाई के लिए विदेश जाने का फैसला किया और उसकी दादी परेशान हो गयी। लेकिन वह उन्हें रेलवे स्टेशन पर छोड़ने आई थी, लेकिन उन्होने न कोई भावना का प्रदर्शन किया और न हीं कोई बात की। वह पूरी तरह से प्रार्थना में मग्न थी और अपनी उंगलियां माला के मनकों पर फिरा रही थीं।

पांच साल बाद, वह घर लौट आये और स्टेशन पर उनकी दादी से मुलाकात हुई। वह एक दिन भी पुरानी नहीं लग रही थी। लेखक ने सामान्य रूप से उसकी नाड़ी को महसूस किया। उस शाम को वह सयानी महिलाओं के समूह के साथ समय बिताते हुये बहुत खुश दिखाई दी।

अगले दिन सुबह वह बीमार हो गई थी। डॉक्टर को बुलाया गया और उसने कहा कि बुखार हल्का है और वे थोड़े समय के भीतर अच्छी तरह ठीक हो जायेगीं। लेकिन उसने दूसरों से कहा कि उसका समय आ गया है। वे शांति से बिस्तर पर प्रार्थना करते हुए माला के दानों को गिन रही थीं। अगली बार उसने अपनी अंतिम सांस ली।

फिर अंतिम संस्कार व्यवस्था और अन्य कार्यवाही प्रारम्भ हुई। दादी के मृत शरीर को एक लाल कफन से ढक दिया गया था। उन्हें अंतिम संस्कार के लिये ले जाने के हेतु एक कच्चा स्ट्रेचर लाया गया । उस समय तक, हजारों गौरैया फर्श पर बिखर का बैठ गई। कोई चहचहाना नहीं था। जब उसकी लाश ले जाई गई, तो गौरैया चुपचाप उड़ गई। यहाँ एक धार्मिक महिला की शब्दचित्र गाथा समाप्त होती है।

Q1.why was it hard for the author to belief that his grandmother was once young and pretty?

Looking at his grandmother who was short, fat and slightly stooped in stature, it was very difficult for him to believe the stories of his grandmother's beauty in her younger days.

The author had only seen and known his grandmother as an old woman. It had been the same situation for twenty years. As a child, therefore, he found it hard to believe that she was young and pretty once upon a time.

**प्रश्न–1:लेखक के लिए यह विश्वास करना क्यों मुश्किल था कि उनकी दादी कभी युवा और सुंदर थी?**

दादी का छोटा मोटा कद, व झुके हुये शरीर को देखते हुए उनके लिए अपनी दादी की युवावस्था से जुड़ी सुंदरता की कहानियों पर विश्वास करना बहुत मुश्किल था।

लेखक ने केवल एक बूढ़ी औरत के रूप में ही अपनी दादी को देखा और जाना था। बीस साल से उनकी एक ही स्थिति थी। इसलिए, एक बच्चे के रूप में, उन्हें यह विश्वास करना कठिन लगता था कि वह एक समय पर युवा और सुंदर थीं।

Q2.Mention three reasons why the author's grandmother was disturbed when he started going to the city school?

when the author started going to the city school his grandmother was disturbed because she could not help him with his lessons in english ..etc also she was unhappy when she heard that the author was being given music lessons and that there were no religious teachings about god and the scriptures at his school.

**प्रश्न2: तीन कारण बताएं कि लेखक की दादी परेशान क्यों हो गई जब वह शहर के स्कूल को जाने जा रहे थे?**

जब लेखक शहर के स्कूल में जाने लगे तो उसकी दादी परेशान थी क्योंकि वह अंग्रेजी के पाठों की पढ़ाई में उनकी मदद नहीं कर पाई थी ।वह इसलिये भी नाखुश थी, जब उसने सुना कि विद्यालय में लेखक को संगीत के सबक दिए जा रहे थे और भगवान और धर्मशास्त्रों की कोई धार्मिक शिक्षा नहीं दी जा रही थी ।

Q3.what were the three ways in which author's grandmother spent her days after he went to school?

1. Reciting prayers.
2. Spinning the wheel.
3. Feeding sparrows.

**प्रश्न3: लेखक के स्कूल जाने के बाद दादी किन तीन तरीकों से अपने दिन व्यतीत करती थी ?**

1. प्रार्थनाओं को गाकर।
2. पहिये वाले चरखे की कताई।
3 गौरेयाओं को खिलाने में।

Q4.The grandmother had a divine beauty. How does the author bring this out?

The author brings out the inner beauty of the grandmother by comparing her to a snow covered winter landscape. This comparison shows her calmness and serenity.

**प्रश्न4: दादी दिव्य सौदर्यमयी थीं, लेखक इसे कैसे स्पष्ट करता है?**

लेखक दादी की आंतरिक सुंदरता की हिमाच्छादित शीतकालीन परिदृश्य से तुलना करते हुये स्पष्ट करता है। यह तुलना उनकी शांतिप्रिय छवि और शांतिचित्तता दिखाती है।

Q5.Mention the odd way in which the author’s grandmother behaved just before she died.

The day when the author arrived from abroad was the day before her death. She broke her routine of praying and sang the songs of the home coming of the warriors on a withered drum along with the ladies of neighborhood.

**प्रश्न 5:उस अजीब तरीके का उल्लेख करें जिसे लेखक की दादी ने मृत्यु से पूर्व किया?**

उस दिन जब लेखक विदेश से आए तो उनकी मृत्यु के पूर्व का दिन था। उन्होंने प्रार्थना की अपनी दिनचर्या को तोड़ दिया और पड़ोसी महिलाओं के साथ घर लौट रहे शूरवीरों के शौर्यगीतों को बेकार पड़े ढोल को बजाते हुये गाने गाए।

Q6. Briefly describe the typical routine of the grandmother in the village and City.

During her village life, everyday she would prepare the author for school.She dressed him up,gave him breakfast and would accompany his grandson to school because his school was attached to the temple.While the children learned alphabets and prayer, the grandmother would read the scriptures at the temple. But after she came to the city, her relationship with author curtailed to an extent of silence ,she couldn't accompany him to his school, cannot help him in his lessons .Instead she would spend her time at home spinning wheel ,reciting prayers form sunrise to sunset,only in afternoon she relaxed to feed sparrows(her happiest time).

These were her routines in both village and city

**प्रश्न 6: दादी की गॉव व शहर की उस विशिष्ट दिनचर्या का संक्षेप में वर्णन करें ।**

अपने गांव के जीवन के दौरान, हर रोज वह स्कूल के लिये लेखक को तैयार करती थी। उन्हें कपड़े पहनाती, उन्हें नाश्ता देती और अपने पोते के साथ स्कूल जाती थीं क्योंकि उनका स्कूल मंदिर से जुड़ा हुआ था। जबकि बच्चे वर्णमाला और प्रार्थना सीखते थे और दादी मंदिर में धर्मशास्त्रों को पढ़ती। लेकिन शहर आने के बाद, लेखक के साथ उसका रिश्ता एक खामोशी से व्यवधानित हो गया, वह उनके साथ स्कूल में नहीं जा सकती थीं और उन्हें पाठों में मदद नहीं कर सकती थीं । इसके बजाय वह अपना समय घर पर कताई के चरखे पर बिताती थी, सूर्योदय से सूर्यास्त तक प्रार्थना करती , केवल दोपहर में वह गौरेयाओं को खिलाते वक्त ही कुछ आराम करती थीं।(उनका सबसे खुशी का समय)

यह गांव और शहर दोनों में उनकी दिनचर्या थी।

Q7.How did the grandma shape the grandsons personality? What role did she play?

She had played the key role in her grandson's life from his childhood. She is the one who takes care of him from sunrise to sunset. She indirectly teaches how the person should lead life with god and scriptures, and thus the grandson has more attachment with his grandmother.

**प्रश्न7: दादी ने पोते के व्यक्तित्व को कैसे आकार दिया? उन्होंने क्या भूमिका निभाई?**

**उन्होंने** बचपन से ही अपने पोते के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका **निभाई** ।वह एकमात्र हैं जो सूर्योदय से सूर्यास्त तक उसकी देखभाल करती हैं। वह अप्रत्यक्ष रूप से यह सिखाती है कि कैसे व्यक्ति को ईश्वर और धर्मशास्त्रों के साथ जीवन जीना चाहिए और इस तरह से पोते का अपनी दादी के साथ बहुत अधिक लगाव है।

==========

**Sources used in writing** :

*Text Book*,www.cbsesamplepapers.info,Cbse online study-*Ncert Resources*, *Googlesearch..&Translator,Chitra English Saurabh.*